

# लोकगीत और सामाजिक विकास

डॉ. आशुतोष शुक्ला

हिंदी विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

**सारांश:** (Abstract)

लोकगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग हैं, जो सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह शोध-पत्र लोकगीतों के माध्यम से समाज के प्रतिबिंब, मानव मन की अभिव्यक्ति, सामाजिक एकता और परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। विभिन्न क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, थारू और भोजपुरी लोकगीतों के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि ये गीत रीतिरिवाजों, पारिवारिक बंधनों, नैतिक मूल्यों और आर्थिक-सामाजिक मुद्दों को व्यक्त करते हैं। लोकगीत सामाजिक चेतना जगाते हैं, एकता को बढ़ावा देते हैं और आधुनिक परिवर्तनों को अपनाते हुए सांस्कृतिक निरंतरता सुनिश्चित करते हैं। भूमंडलीकरण के दौर में इनकी लुप्त होने की चुनौती है, इसलिए संरक्षण आवश्यक है। यह अध्ययन माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है और लोकगीतों को सामाजिक विकास का प्रहरी मानता है।

**कीवर्ड्स:** (Keywords)

लोकगीत, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक धरोहर, समाजशास्त्र, सामाजिक चेतना, लोकसंस्कृति, क्षेत्रीय विविधता, संरक्षण, आधुनिक परिवर्तन, मानव मन।